

1417338

कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा



(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)



नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय संस्कृत साहित्यम्

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक 18-2-2026

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	012	19	04
2	05	20	
3	02	21	
4	01	22	
5	08	23	
6	02	24	
7	02	25	
8	02	26	
9	02	27	
10	08	28	
11	05	29	
12	05	30	
13	05	31	
14	03	योग	80
15	03	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	03	अंकों में	शब्दों में
17	04	80	Eighty
18	04		

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतिक

3	1	6	4	1
---	---	---	---	---

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 180/2025

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:-
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस-पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।



खण्ड - 'अ'

1

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

1(i) (ब) पिघया ।

(ii) (स) श्रीमद्भगवद्गीतातः ।

(iii) (ब) शुकनासः ।

(iv) (अ) अविवेकः ।

(v) (अ) शिववीरस्य ।

12 (vi) (अ) योगः ।

(vii) (द) कर्मणि ।

(viii) (ब) SSS ।

(ix) (स) सुद्युपास्यः ।

(x) (अ) रूपवम् ।

(xi) (ब) मौडनुस्वारः ।

(xii) (द) उत्प्रेक्षायाम् ।

2(i) आये जात ! कथितव्यः कथय ।

(ii) न श्रुत आकर्णयति ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iii) मम जीवनप्रदीयो निर्वपितो भवितुम् इच्छति ।

(iv) इति जलमध्ये पुष्पाञ्जलिं दत्वा क्षणं स्थितः ।

(v) तस्य राज्येन सह अस्ति कश्चित् सम्पर्कः ।

3 (क) द्वितीया विभक्ति 'धिक' योगे ।
(ख) चतुर्थी विभक्ति 'नमः' योगे ।

4 यमकः अलङ्कारः ।

खण्डः - (ब)

5 (क) श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तशतं श्लोकाः सन्ति ।

(ख) 'कादम्बरी' वाणभट्टस्य प्रसिद्धाः रचनाः अस्ति ।

(ग) 'पाषाणीकन्याः' श्रीचन्द्रशेखरदासवर्मणः प्रसिद्धौ कथासङ्ग्रहौ अस्ति ।

(घ) 'शिवराजविजय' नामकस्य प्रसिद्धस्य उपन्यासस्य रचयिता पण्डितः अम्बिकादत्त व्यासः ।

6 (क) वसन्ततिलका लक्षणम् → उक्ता, वसन्ततिलका तंभाजा
जगतां गः ।

वसन्ततिलका उदाहरणम् → पद्माकुरं दिनकरो विकची
कंशति ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

ब

55 15 5 15 15 5

= 11 वर्गः

7

(क) हंसा यथा राजतपञ्जरस्थः ।

इति 'इन्द्रवज्राः' ध्वन्दः अस्ति ।

8

यद्यपि सर्वत्र नीरज-राजितम् नीरं अस्ति, किन्तु मरालस्य
मानसं मानसं विना न रमते ।

बुद्धिसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तिका 'शाश्वती' भाग-दो
के 'कर्मशास्त्रम्' पाठ से ली गई है। मूलतः यह पाठ श्रीमद्भगवत्-
गीता के भीष्म-पूर्व से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म
का सदुपदेश देते हैं।

व्याख्या :- श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि - हे अर्जुन ! तुम्हारा
अधिकार केवल कर्म पर है, उसके फल पर तुम्हारा अधिकार नहीं
है। तुम केवल निर्वार्थ भाव से कर्म करते रहो, उसके फल की
चिन्ता मत करो ।

10 (क) (i) अतिलोभस्थ ।
(ii) अधिकाधिक ।

(ख) अतिलोभितजनाः दुष्टानि कर्माणि कुर्वन्ति, चौर्यं कुर्वन्ति,
हत्यां कुर्वन्ति ।

(ग) (i) अतिलोभ ।
(ii) विनाशकारकः ।
(iii) विधांसः ।

(घ) अतिलोभः विनाशकारकः ।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड: - (स)
	11	(क) समुद्रः ।
		(ख) सुहृदः लक्षणं यत्समये दानमानादिकं क्रियते ।
(5)		(ग) (i) (द) सुहृदः ।
		(ii) (ब) ददौ ।
	12	(क) नीरक्षीरविवेके ।
(5)		(ख) 'नीरक्षीरविवेकः' इति हंसालस्यं कुलव्रतम् अस्ति ।
		(ग) (i) (द) तनुषे ।
		(ii) (ब) आलस्यम् ।
	13	(क) यौगः ।
		(ख) सागरिका यौगशिखायाः विषये स्व मातुः मुखाद् श्रुतवती ।
(5)		(ग) (i) (अ) नूतनः ।
		(ii) (स) वर्तते ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

14 (ख) कः स्वकायं न विरमाति ?

(ग) श्रीनाथारः कीदृशी आसीत् ?

(ङ) चातकः किम् न याचते ?

15

(दीनबन्धुः श्रीनाथारः)

पाठ सार - प्रस्तुत पाठ हमारी पाठ्यपुस्तिका 'शाश्वती' भाग-दो के 'दीनबन्धुः श्रीनाथारः' पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ 'पाषाणिकन्या' कथासंग्रह से उद्धृत है। इसमें श्रीनाथार के बारे में बताया गया है कि वह किस तरह अपने अच्छे कार्यों से एक अच्चा पद हासिल करता है। पाठानुसार श्रीनाथार के बारे में बताया गया है कि - समय से उठना, दफ्तर जाना, जाते ही दफ्तर के कार्यों में लग जाना, दफ्तर से सीधा घर आना आदि विश्व विशेषताएँ बतायी गई हैं। उसके का वह उड़ीसा सरकार के अधीन कार्य करते हैं। उसके कार्यों से प्रसन्न होकर सरकार ने उसे खाद्यापूर्ति संस्थान के सचिव पद पर नियुक्त कर दिया। वह हर महीने की प्रथम तारिक को अपनी कुमाई का आधे से अधिक भाग केरल स्थित अनाथाश्रम भेजता है।

एक दिन उनके दफ्तर में एक पत्र आया। उसे पढ़ते हुए श्रीनाथार की आँखों से निकलते हुए आसुओं पत्र आधे से अधिक गीला हो चुका था। वह उसे पढ़ते हुए भावुक हो गये। ये सब दृश्य उसका लिपिक श्रीदास देख रहा था। श्रीनाथार ने श्रीदास से कहा कि - अब मेरा जाने का समय निकट आ गया है। जल्दी से मेरे दफ्तर के कार्य किसी और को हस्तगत करने सम्बन्धी पत्र तैयार करो। इस प्रकार लम्बा अवकाश लूंगा। इस प्रकार उनकी दफ्तर से भावुक विदाई हुई। अगले दिन फिर से दफ्तर में एक पत्र आया। कौतुहल के कारण श्रीदास



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		ने उस पत्र को खोला और पढ़ने लग गया। उस पत्र में सुश्री मेरी ने लिखा था कि - श्रीनाथार के द्वारा बनाया गया आश्रम वृक्ष की तरह फल-फल रहा है। वहाँ सौ से अधिक बच्चों को लालन-पालन होता है। सुश्री मेरी भगवान यीशु से प्रार्थना करती हैं कि श्रीनाथार को लम्बी आयु प्रदान हो। वह आगे कहती हैं कि मेरा किसी भी सम भगवान घर से जुड़ावा ज्ञा सकता है अतः तुम अनाथाश्रम की जिम्मेदारी ले लो। ऐसा कहकर वह श्रीनाथार को बहुत सारा आशीर्वाद तथा शुभकामनाएँ देती हैं।
3	16	(क) अनुप्रासः लक्षणम् - शब्दसम्यं अनुप्रासः। अनुप्रासः उदाहरणम् - पतितैः पतमानश्च पादपस्थैः च सारतः।
4	17	(क) एकस्मिन् वने एकः चपलः वानरः वसति स्म। (ख) सर्वैः रक्षाः तस्य दुर्व्यवहारो पीडिताः जाताः। (ग) सूचं मुन्यान् वन्यप्राणिनः पीडयति स्म। खगानां मीढानि नाशयति स्म। (घ) ते कष्टोपायविषये गौष्ठीम् अकुर्वन्। (ङ) तत्र एकेन वृद्धकपीतेन उपायं सूचित्वा उक्तम् अहं स्वानि कष्टमुक्तान् करोमि। (च) कपीतेन उक्तं मातुल! मधुमक्षिकाणां गृहं सुरक्षितमतः इमाः उपदसन्ति। (छ) वानरेण मधुमक्षिकाणां गृहं खण्डितम्। (ज) मधुमक्षिका दर्शनं पीडितः वानरः भूतः।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

19

(ख) वयम् प्रातः योगाभ्यासं करिष्यामः ।

(ग) मह्यम् सुभाषितं शीयते ।

(घ) वृक्षाः सर्वे प्राणवायुं ददाति । वृक्षाः सर्वाः प्राणवायुं ददाति ।

(च) अस्मि विद्याधनं एव सुरक्षितम् धनं अस्ति ।

18

स्वतन्त्रता दिवसः

अस्माकम् देशम् प्रत्येक वर्षे पञ्चदश तारिके अगस्तस्य मासे स्वतन्त्रता दिवसः आयोजितवान् । अस्मिन् दिने अस्माकम् देशं स्वतन्त्र आसीन् स्म । प्रत्येक वर्षे अस्मिन् दिवसे देशस्य प्रमुखाः स्थूला पताकायाम् आरोहयति । अस्माकम् देशम् स्वतन्त्रायाः अनेके वीराः स्व प्राणाद्वति ददाति । अस्मिन् दिवसे अनेके सांस्कृतिक कार्यक्रमा आयोजितवान् । देशस्य नागरिके एषोत्सवः स्वतन्त्रता दिवसः मन्यते । वयम् अपि देशस्य समानं करोति तथा देशाय स्व प्राणाद्वति ददाति तत्पराः सन्ति ।

समाप्तः



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1807025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1802025

[illegible]



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

HSER 180/2025

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1801/2025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18072025

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18072025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18072025

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

USER-1502025



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		प्रश्न संख्या 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100

BSIR-180/2025

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

शुद्ध कार्य
१ ९ ९ ९ १ ९ १ १ १ ९
येमाता राजमानसलगा
ह त ज ग ग

स्यादिन्द्रवप्रा यदि तौ जगौ गः

उपन्द्रेवप्रा जगजास्तर्गो गौ

९ ९ १ ९ ९ १ ९ १ ९ ९

० ९ ९ ९ १ १ ९ १ १ १ ९ ९ ९ १ ९ ९ १ ९

